(२)

ब्रह्म-यामले नारद-ब्रह्म-सम्वादे

श्रीमद्-गुरु-कवचम्

।। नारद उवाच ।।

ब्रह्मन् ! गुरोर्मनु - स्तोत्रं, यथावदवधारितम् ।
कवच - श्रवणे श्रद्धा, साम्प्रतं कथ्यतां मम ।।१

।। ब्रह्मोवाच ।।

श्रीगुरोः कवचं गुह्यं, वर्ण्यमानं निबोध मे ।
नाभक्ताय प्रदातव्यं, देयं भक्ति - मते सदा ।।२

विनियोग—ॐ अस्य श्रीगुरु-कवचस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, त्रि-देवात्मा अमुक-नाम-श्रीगुरुः देवता, अमुक-नाम-श्रीगुरुदेव-प्रीतये पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे । त्रि - देवात्मा अमुक-नाम-श्रीगुरुदेवाय नमः हृदि । अमुक-नाम-श्रीगुरुदेव-प्रीतये पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

।। कवच-स्तोत्रम् ।।

ॐ शिरो मे सर्वदा पातु, गुरुः सर्वाङ्ग - सुन्दरः ।
उद्यद्-भाल - ललाटं मे, कृपा - दृष्टिर्दृशौ मम ।।१
मन्द-स्मितो मुखं पातु, श्रुती च मधुरं वचः ।
हृदयं पातु मन्त्रोक्तिर्वराभय - धरः करौ ।।२
गुरु - पद्मासनं पातु, नाभ्यादि - चरणान्तिकम् ।
गुरु - पाद - नख - ज्योत्स्ना, सर्वाङ्गं सर्वदाऽवतु ।।३
वाग्-बीजं मे सदा पातु, कामाद्यन्तांश्च खेचरी ।
आनन्द-भैरवः पातु, सदैवानन्द - मन्दिरम् ।।४
आनन्द - भैरवी पातु, ममानन्दं सदैव सा ।
हिंस्रेभ्यः सर्वदा पातु, श्रीप्रासाद - परो मनुः ।।५
परा-प्रासाद - मन्त्रस्तु, पातु नित्यं विपद् - दशाम् ।
हंसः पीठं पातु चोर्ध्वं, सर्व - दिक्षु सदाऽवतु ।।६
कुलं तु गुरवः पान्तु, पात्वधः कमलासनः ।

श्रीगुरोः कवचस्यास्य, ब्रह्मर्षिः परिकीर्तितः ।
छन्दोऽनुष्टुप् देवता च, त्रि-देवात्मा गुरुः स्वयम् ।।

ज्ञानं पातु च दिव्यौघा, इच्छां सिद्धौघ - संज्ञकः ।
मानवौघाः क्रियां पान्तु, श्रीगुरुः सर्वदाऽवतु ।।७

फल-श्रुति

ॐ इतीदं कवचं नित्यं, प्रातः - कृत्यावसानके ।
यः पठेन् मानवो भक्त्या, त्रैलोक्य - विजयी भवेत् ।।१
मन्त्र - सिद्धिर्भवेत् तस्य, देवता च प्रसीदति ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, नात्र कार्या विचारणा ।।२
गुर्वभिधानं कवचमज्ञात्वा क्रियते जपः ।
वृथा श्रमो भवेत् तस्य, न सिद्धिर्मन्त्र - पूजने ।।३
गुरु - पादं पुरस्कृत्य, कवचं पठ्यते शुभम् ।
तदा मन्त्रस्य यन्त्रस्य, सिद्धिर्भवति नान्यथा ।।४
गुरु-गोप्यं च कर्त्तव्यं, न वक्तव्यं कदाचन ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं, न प्रकाश्यं कदाचन ।।५
दातव्यं भक्ति - युक्ताय, कुलीनाय विशेषतः ।
त्रैलोक्य - दुर्लभं चैतद्, भुक्ति-मुक्ति - फल-प्रदम् ।।६
सर्व-तीर्थ - फलं येन, पठ्यते कवचं गुरोः ।
इति ते कथितं पुत्र ! सावधानोऽवधारय ।।७

(पृष्ठ २२ का शेषांश)

।। फल-श्रुति ।।

यह 'गुरु कवच' ब्रह्म-लोक में भी दुर्लभ है। तुम्हारे प्रेम से मैंने इसे कहा है। हे प्रिये! अन्य किसी से नहीं कहा है ।।१।। पूजा के समय में, विशेष कर जप करते समय, हे देवि! तीनों लोकों में दुलभ यह कवच भोग और मोक्ष-रूपी फल प्रदान करता है ।।२।। हे देवि! जो गुरु के 'कवच' का पाठ करताहै, उसे सभी मन्त्रों का, सभी यन्त्रों का और सभी तीर्थों का पूरा फल प्राप्त होता है ।।३।। किसी शुभ दिन में, भोज-पत्र पर, अष्ट-गन्ध से चक्र के सहित कवच को भक्ति-पूर्वक लिखे और धूप-दीपादि से उसकी पूजा कर गुरु-मन्त्र द्वारा मिश्री-युक्त सुधा द्वारा साधक पवित्र मन से तर्पण करे। फिर उसे धारण करे, तो हे देवि! इस संसार में वह भूत-भय को दूर करता है। मन्त्र-साधक तीनों कालों (प्रातः, मध्याह्न, सायं) में कवच का पाठ करे, तो वह संसार के बन्धन से छूट जाता है। इस प्रकार यह श्रेष्ठ 'कवच' दिव्य-सिद्धौघों की कला से समन्वित है ।।४-६।।

हिन्दी श्रीमद्-गुरु-कवच

।। पूर्व-पीठिका ।।

श्री नारद बोले—हे ब्रह्मन् ! गुरु-मन्त्र के स्तोत्र को यथा-विधि समझ लिया है। अब कवच सुनने की मेरी श्रद्धा है, उसे कहिए।

श्री ब्रह्मा ने कहा—श्रीगुरु का गोपनीय कवच कहता हूँ, मुझसे सुनो। भक्ति-हीन को इसे नहीं देना चाहिए, सदैव भक्ति-युक्त को ही यह देने योग्य है।

।। सविधि श्रीमद्-गुरु-कवच-स्तोत्र ।।

पहले पृष्ठ २३ के अनुसार विनियोग और ऋष्यादि-न्यास कर लें, तब कवच-स्तोत्र का पाठ करें। यथा—

सर्वाङ्ग-सुन्दर गुरुदेव सदैव मेरे शिर, भाल और ललाट की रक्षा करें तथा उनकी कृपा-दृष्टि मेरे दोनों नेत्रों की रक्षा करे ।।१

गुरुदेव की मन्द मुस्कान मेरे मुख की और उनकी मधुर वाणी मेरे कानों की रक्षा करे। उनके मन्त्रात्मक वचन मेरे हृदय की और उनके वर-अभय धारण करनेवाले कर-कमल मेरे हाथों की रक्षा करें ।।२

गुरुदेव का पद्मासन मेरी नाभि से चरणों तक के शरीर की रक्षा करे और गुरुदेव के चरणों की नख-चन्द्रिका सदैव मेरे सारे अङ्गों की रक्षा करे ।।३

वाग्-बीज (ऐं) सदा कामादि से खेचरी तक मेरी रक्षा करे। आनन्द-भैरव मेरे आनन्द-मन्दिर की रक्षा करें ।।४

आनन्द-भैरवी सदा ही मेरे आनन्द की रक्षा करें और श्रीप्रासाद-परा मन्त्र सदैव हिंसक प्राणियों से मेरी रक्षा करे ।।५

श्री परा-प्रासाद मन्त्र प्रति-दिन विपत्ति की दशा से मेरी रक्षा करे। हंस-पीठ ऊर्ध्व प्रदेश में और सभी दिशाओं में सदा मेरी रक्षा करे ।।६

गुरु लोग मेरे कुल की रक्षा करें, कमलासन अधो प्रदेश में मेरी रक्षा करे। दिव्यौघ गुरु मेरे ज्ञान की, सिद्धौघ नामक गुरु मेरी इच्छा की तथा मानवौघ गुरु मेरी क्रिया की रक्षा करें, श्री गुरुदेव सदैव मेरी रक्षा करें ।।७

।। फल-श्रुति ।।

इस 'कवच' को जो मनुष्य भक्ति-पूर्वक प्रतिदिन प्रातःकृत्य के अन्त में पढ़ता है, वह तीनों लोकों में विजयी होता है ।।१।। उसे मन्त्र की सिद्धि मिलती है और देवता उस पर प्रसन्न होता है। यह सत्य है, सत्य है, बारम्बार सत्य है, इसमें कुछ भी विचार करने की बात नहीं है ।।२।। गुरु-नामक 'कवच' को जाने बिना जो जप करता है, उसका परिश्रम व्यर्थ होता है। उसे मन्त्र-पूजन में सिद्धि नहीं मिलती ।।३।। गुरु-चरणों को आगे करके कल्याणकारी कवच का पाठ किया जाता है। तब मन्त्र-यन्त्र की सिद्धि होती है, अन्यथा नहीं ।।४।। गुरु को गोपनीय रखना चाहिए, कभी उनको प्रकट नहीं करना चाहिए। जिस किसी को 'गुरु-कवच' न देना चाहिए और न ही उसे प्रकाशित करना चाहिए ।।५।। भक्ति से युक्त, विशेषकर कुलीन व्यक्ति को ही, तीनों लोकों में दुर्लभ, भोग-मोक्ष को फल-रूप में देनेवाले इस 'कवच-स्तोत्र' को देना चाहिए ।।६।। गुरुदेव के इस कवच को जो पढ़ता है, उसे सभी तीर्थ-स्थानों का फल मिल जाता है। तुमसे यह सब कहा है, सावधानी से इसे हृदयङ्गम करो ।।७।।